

डॉ. जॉर्ज पेटन, बाइबल अनुवाद, सत्र 24, अलंकारिक प्रश्न और अलंकारिक कथन

© 2025 जॉर्ज पेटन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉर्ज पेटन द्वारा बाइबल अनुवाद पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 24 है, अलंकारिक प्रश्न और अलंकारिक कथन।

इस प्रस्तुति में, हम एक और अनुवाद चुनौती के बारे में बात कर रहे हैं, और वह है अलंकारिक प्रश्न और अलंकारिक कथन।

हम आम तौर पर बयानबाजी के सवालों के बारे में सोचते हैं, लेकिन बयानबाजी के बयान ऐसी चीज नहीं है जिस पर अक्सर चर्चा होती है। हम यह देखना चाहते हैं कि ये दोनों किस तरह से बाइबल अनुवादकों और बाइबल व्याख्याकारों के लिए चुनौतियाँ पेश कर सकते हैं। इसलिए, जहाँ तक हम जानते हैं, हर भाषा में सवाल होते हैं।

और आमतौर पर, वे जानकारी मांगने के आदी होते हैं। जैसे, क्या समय हो रहा है? या हमारे मेहमान कब आ रहे हैं? आप कितनी रोटियाँ खरीद रहे हैं? जिम से बात करने वाला कौन है? इसलिए हमारे पास जानकारी के प्रकार के ये प्रश्न हैं। लेकिन प्रश्नों के अन्य उद्देश्य भी हैं।

और जब हमने भाषण क्रिया सिद्धांत को देखा, तो हमने उसमें से कुछ देखा, जहाँ आप कुछ ऐसा कह सकते हैं, जैसे, क्या आप नमक दे सकते हैं? और फिर यह जानकारी के लिए कोई प्रश्न नहीं है; यह एक विनम्र अनुरोध है। इसलिए, प्रश्नों का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है। और कभी-कभी, किसी प्रश्न का उपयोग किसी के उत्तर के रूप में किया जा सकता है।

आपसे एक प्रश्न पूछा जाता है, और फिर आप उसका उत्तर एक प्रश्न के साथ देते हैं, लेकिन जिस प्रश्न का आप उत्तर देते हैं वह वास्तव में उससे कहीं अधिक है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि हाई स्कूल में पढ़ने वाली एक युवा लड़की, सुसान, स्कूल से घर आती है, और कुछ देर वहाँ रहने के बाद, वह अपनी माँ से पूछती है कि क्या वह टीवी देख सकती है। क्या मैं टीवी देख सकती हूँ? और इसलिए यह एक वास्तविक अनुरोध है, सीधे तौर पर, जैसा कि यह दिखता है।

और माँ कहती है, क्या तुमने अपना होमवर्क पूरा कर लिया है? अब, यह जानकारी के लिए अनुरोध है, लेकिन यह उससे कहीं ज़्यादा है। तो, माँ ने जवाब दिया कि यह घर के नियमों पर आधारित था। माँ और सुसान दोनों जानते हैं कि आपको कुछ और करने से पहले अपना होमवर्क करना होगा।

उदाहरण के लिए, टेलीविजन देखना। अगर आपने अपना होमवर्क पूरा कर लिया है, तो इसका जवाब हाँ है, आप टेलीविजन देख सकते हैं। अगर आपने अपना होमवर्क पूरा नहीं किया है, तो आप पूछ ही क्यों रहे हैं? तो, माँ यह कहती है, और उसे बस सवाल पूछना है। सुसान को पहले से

ही जवाब पता है, चाहे वह हां हो या नहीं, क्योंकि वह जानती है कि उसने अपना होमवर्क किया है या नहीं।

और वह हाँ कहती है, और फिर वह टीवी देखने चली जाती है। अगर उसने अभी तक अपना होमवर्क नहीं किया है, तो वह चली जाती है, और फिर जब वह अपना होमवर्क पूरा कर लेती है, तो वह वापस आती है। यह सब इस सवाल में समाहित है: क्या तुमने अपना होमवर्क किया है? तो, हमेशा सतह पर ऐसी चीज़ें होती हैं जिन्हें हम वास्तव में नहीं देख पाते, लेकिन हम उन्हें समझते हैं।

और इसलिए यह प्रश्नों के अन्य उपयोगों में से एक है। लेकिन जिस मुद्दे पर हम अब विचार करना चाहते हैं वह एक अन्य प्रकार का प्रश्न है। यह कई भाषाओं में आम है।

मैंने जितनी भी भाषाएँ पढ़ी हैं, उनमें अलंकारिक प्रश्न होते हैं, और वे जानकारी मांगने वाले शाब्दिक प्रश्न नहीं होते, बल्कि उनका उपयोग किसी तरह के प्रभाव के लिए किया जाता है। अलंकारिक शब्द रैटोरिक शब्द से आया है। रैटोरिक का अर्थ है किसी को प्रभावित करने की कोशिश करना, उनकी सोच, या उनके व्यवहार, या उनकी समझ को प्रभावित करने की कोशिश करना।

और इसलिए, उन्हें शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए। समस्या यह है कि जब वे किसी दूसरी भाषा, जैसे कि ग्रीक या हिब्रू से हमारी भाषा में अनुवादित होकर हमारे पास आते हैं, तो हम उन्हें कैसे पहचानते हैं? इसलिए, उदाहरण के लिए, मार्क 8:36 में, मनुष्य को पूरी दुनिया को प्राप्त करने और अपनी आत्मा को खोने से क्या लाभ है? और अलंकारिक प्रश्नों के साथ, हम उत्तर की अपेक्षा नहीं करते हैं। अक्सर, जो लोग इसे सुनते हैं, वे जानते हैं कि उत्तर क्या है।

वे जानते हैं कि यह कोई सवाल नहीं है। और यहाँ ऊपर दिए गए इस विशेष प्रश्न में, यह स्पष्ट है कि इसका उत्तर यह है कि यदि कोई व्यक्ति सब कुछ पा ले और अपनी आत्मा खो दे तो उसे कोई लाभ नहीं होता। वह अंततः हार जाता है।

तो, यह सब एक साधारण प्रश्न में समाहित है: इससे मनुष्य को क्या लाभ होता है? तो, कभी-कभी, यह निर्धारित करना आसान नहीं होता कि कोई प्रश्न वास्तविक है या अलंकारिक। तो, मेरे पास यहाँ कुछ छंद हैं, और फिर हम चर्चा कर सकते हैं कि यह वास्तविक है या अलंकारिक। क्या व्यक्ति जानकारी माँग रहा है, या वे इसे अलंकारिक प्रभाव के लिए उपयोग कर रहे हैं? सबसे पहले, परमेश्वर आपको पुत्रों के रूप में व्यवहार कर रहा है, क्योंकि ऐसा कौन सा पुत्र है जिसे उसका पिता अनुशासित नहीं करता? वास्तविक या अलंकारिक? संभवतः अलंकारिक। ठीक है, इस बारे में आपका क्या विचार है? यह वह मामला है जब यीशु भीड़ में थे, और रक्तस्राव से पीड़ित महिला ने उन्हें छुआ, और उन्होंने कहा, मेरे वस्त्र किसने छुए? क्या यह एक वास्तविक प्रश्न है या एक अलंकारिक प्रश्न? मुझे लगता है कि यह एक वास्तविक प्रश्न था।

और शिष्यों ने कहा, क्षमा करें, महोदय, हमें इधर-उधर धकेला जा रहा है। हम लोगों की भीड़ से घिरे हुए हैं। और जवाब यह है कि हर कोई आपको छू रहा है।

तुम्हारा क्या मतलब है, मुझे कौन छू रहा है? चारों ओर देखो; लगभग 15 या 20 लोग तुम्हें छूने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए, उन्होंने इसे एक वास्तविक प्रश्न के रूप में लिया, इसलिए उन्होंने इसका उत्तर देने का प्रयास किया, है न? ठीक है, अगला। पहला तीमुथियुस 3.5, क्योंकि यदि कोई व्यक्ति अपने घर का प्रबंधन करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल कैसे कर सकता है? और निहितार्थ यह है कि यदि कोई व्यक्ति अपने घर का प्रबंधन करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल नहीं कर सकता।

प्रेरितों के काम 2 :7, और वे चकित होकर कहने लगे, क्या ये सब जो बोल रहे हैं, गलीली नहीं हैं? और उत्तर है, ये सब गलीली हैं। हम सब जानते हैं। मत्ती 13:10, तब शिष्यों ने आकर यीशु से कहा, तू उनसे दृष्टान्तों में क्यों बात करता है? यदि हम मत्ती और मरकुस से संबंधित अंश को पढ़ें, तो शिष्य वास्तव में जानना चाहते थे कि क्या हो रहा था। क्योंकि दृष्टान्तों में लोगों से बात करते समय, शिष्य भी कभी-कभी इसे समझ नहीं पाते थे।

इससे यह सवाल उठता है कि बीज बोने वाले का दृष्टान्त क्या है। क्या आप कृपया हमें यह समझाएंगे? तो, यह एक वास्तविक प्रश्न है, या ऐसा प्रतीत होता है। और यह मत्ती 13:27 में गेहूँ और जंगली पौधों का दृष्टान्त है: क्या तुमने अपने खेत में अच्छे बीज नहीं बोए? फिर, उसमें खरपतवार कैसे हैं? हमारे पास यहाँ दो प्रश्न हैं। पहला प्रश्न अलंकारिक लगता है।

क्या हमने पहले से ही अच्छे बीज नहीं बोए थे? और ये मज़दूर शायद वही थे जिन्होंने वास्तव में ऐसा किया था। तो, जवाब यह है कि हम जानते हैं कि हमने अच्छे बीज बोए थे। फिर असली सवाल यह है कि अगर हम ही अच्छे बीज बोने वाले थे तो ये खरपतवार कैसे उग आए? तो यहाँ कुछ अन्य सवाल हैं। मार्क 3.4, क्या सब्ज के दिन भलाई करना या नुकसान पहुँचाना, किसी की जान बचाना या मारना जायज़ है? लेकिन वे चुप रहे।

यह मार्क 3 में यीशु है जब वह सब्ज के दिन किसी को चंगा कर रहा था, और वह फरीसियों से ये सवाल पूछ रहा था, और वे यीशु को बुलाने का बहाना ढूँढ रहे थे। वह उनसे यह कहता है, लेकिन वे चुप रहते हैं। अब, क्या वे जवाब दे सकते थे? शायद।

मार्क 4.30, वे नाव में हैं, तूफान है, यीशु सो रहे हैं। गुरु, क्या आपको परवाह नहीं है कि हम नाश हो रहे हैं? यह बयानबाजी जैसा लगता है। मार्क 4:30, मार्क 4:40, और उसने उनसे कहा, तुम क्यों डरते हो? क्या तुममें अभी भी विश्वास नहीं है? तो, क्या यीशु भ्रमित है? क्या वह जानकारी माँग रहा है? शायद नहीं।

और एक तरह से, वह उनसे यही कह रहा है। हालाँकि, यह कठोर नहीं लगता। हो सकता है कि यह किसी तरह से विनम्र या अधिक कोमल फटकार हो।

मार्क 3:4 में, ऐसा लगता है कि वह उन्हें बुला रहा था और उनसे परेशान था। आप उसकी आवाज़ में टोरा को सुन सकते हैं, और बाद में यह कहता है कि वह अपनी आत्मा में इतना परेशान था कि वह उन पर क्रोधित था। मार्क 4:41, मार्क 4:40 के बाद, जब समुद्र शांत हो गया

था, और उसने कहा, क्या तुम्हें कोई विश्वास नहीं है? उन्होंने कहा, यह कौन है? यहाँ तक कि हवा और लहरें भी उसकी आज्ञा मानती हैं।

क्या यह वास्तविक है या अलंकारिक? शायद दोनों में से कुछ। इसलिए, यह निर्धारित करना हमेशा आसान नहीं होता कि यह वास्तविक है या अलंकारिक। लेकिन एक सुराग यह है कि क्या जिन लोगों से सवाल पूछा गया था, उन्होंने सवाल का जवाब दिया? और अगर उन्होंने नहीं दिया, तो यह अलंकारिक हो सकता है।

और अगर आप शिष्यों के समूह के बारे में बात कर रहे हैं जो एक दूसरे से पूछ रहे थे, तो उनमें से किसी को भी जवाब नहीं पता था। तो, एक और सुराग यह है कि क्या ऐसा लगता है कि पूछने वाले व्यक्ति को जानकारी नहीं थी? क्या हम कह सकते हैं कि शिष्यों को वास्तव में यह एहसास नहीं था कि उस समय यीशु कौन थे? हाँ, इसके लिए एक अच्छा मामला है। ठीक है।

तो, पहला मुद्दा यह निर्धारित करना है कि यह एक वास्तविक प्रश्न है या एक अलंकारिक प्रश्न। उससे संबंधित यह है कि प्रश्न का कार्य क्या है? व्यक्ति ने इसे क्यों कहा, या इसका उपयोग क्या कहने के लिए किया जाता है? फटकार लगाना एक आम बात है, लेकिन यह एकमात्र नहीं है। हमें बाइबल में अन्य प्रश्न मिलते हैं, जो फिर व्याख्यात्मक प्रश्न पूछते हैं कि यह क्यों कहा गया था।

हम समझते हैं कि यह कहा गया है, लेकिन हम हमेशा यह नहीं समझ पाते कि यह क्यों कहा गया है जब तक कि हम पाठ में थोड़ा गहराई से न देखें। ठीक है, तो हम यह अनुमान लगाने की कोशिश करते हैं कि प्रश्न में इस्तेमाल किए गए शब्दों और विषय-वस्तु के शब्दों के आधार पर इसका क्या कार्य है, लेकिन संदर्भ, स्थिति और लोगों के परिदृश्य पर भी। ठीक है, तो जिन चीज़ों का उपयोग किया जाता है उनमें से एक यह है कि यह स्पष्ट रूप से सत्य है, इस तथ्य को बताना या ज़ोर देना।

इसलिए मार्क 3:23 में यीशु कहते हैं, शैतान शैतान को कैसे निकाल सकता है? यह स्पष्ट है: शैतान शैतान को नहीं निकाल सकता। एक और, गोलियत, युद्ध के मैदान में कहता है, क्या मैं पलिशती नहीं हूँ और तुम शाऊल के सैनिक हो? यह एक स्पष्ट बात है, इसलिए तुम सामने आकर ऐसा कहते हो। और इसलिए, निश्चित रूप से, वे सभी यह जानते थे।

यूहन्ना 18:35, जब यीशु, मान लीजिए, पिलातुस के साथ चर्चा कर रहे थे, शायद बहस कर रहे थे, और यीशु ने कहा, क्या किसी ने तुम्हें मेरे बारे में बताया, या तुम पहले से ही जानते थे? और उसने कहा, क्या मैं यहूदी हूँ? इसका क्या मतलब है? मैं यहूदी नहीं हूँ। मुझे कैसे पता? ठीक है, तो यह एक स्पष्ट तथ्य है। मैं निश्चित रूप से यहूदी नहीं हूँ। ठीक है, दूसरा तरीका किसी विशेष स्थिति या परिस्थिति पर ध्यान केंद्रित करना है, खासकर जब कई संभावनाएँ हो सकती हैं।

तो, याकूब 4, क्षमा करें, 5:13 और 14, क्या तुम में से कोई पीड़ित है? वह प्रार्थना करे। क्या कोई प्रसन्न है? वह स्तुति गाए। क्या तुम में से कोई बीमार है? वह प्राचीनों को बुलाए और उनसे अपने ऊपर हाथ रखने को कहे।

और इसलिए, भावना यह है कि अगर कोई ऐसा है, तो उसे वैसा करना चाहिए। या जो भी ऐसा है, उसे वैसा करने दें। लेकिन इससे ये बयानबाजी वाले सवाल पैदा हुए हैं।

कभी-कभी, यह किसी नए विषय को प्रस्तुत करने या किसी चीज़ की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए होता है। रूथ 3:1 में, नाओमी अपनी बहू से कहती है, मेरी बेटी, क्या मैं तेरे लिए सुरक्षा की तलाश न करूँ कि तेरा भला हो? और फिर वह कुछ और कहती है। रूथ उसका जवाब भी नहीं देती।

मैं एक टिप्पणी पढ़ रहा था, और उसमें कहा गया था, इसलिए नाओमी ने यह अलंकारिक प्रश्न पूछा, और रूथ ने स्पष्ट रूप से अपने मन में सोचा कि इसका उत्तर हाँ है। मुझे नहीं पता कि नाओमी के पूछने का यही उद्देश्य था। ऐसा लग रहा था कि वह किसी नई चीज़ की ओर झुक रही थी, और वह विषय को आगे बढ़ा रही थी।

यह विषय को उठाने और उस स्थिति और विषय में जाने का एक तरीका है। एनआईवी और एनएलटी बयानबाजी के सवाल को तोड़ते हैं, और वे इसे एक बयान में कहते हैं। मुझे आपको एक सुरक्षित घर खोजने में मदद करनी चाहिए।

दिलचस्प है। ठीक है। मार्क 4:30 और 31, हम परमेश्वर के राज्य को कैसे चित्रित करेंगे या किस दृष्टांत के द्वारा हम इसे प्रस्तुत करेंगे? यह राई के दाने के समान है इत्यादि।

उस मामले में, यीशु भ्रमित नहीं है। वह नहीं है; हे भगवान, यार, मुझे यह सोचने दो कि इसे कैसे कहा जाए। वह एक नया विषय पेश कर रहा है, और यह उन अन्य बातों से एक बदलाव है जो उसने पहले कही थीं।

वह एक दृष्टांत देता है, और फिर वह यह परिवर्तन करता है, और फिर वह दूसरा दृष्टांत देता है, और इसी तरह आगे बढ़ता है। हमने अब तक किसी विशेष स्थिति पर ध्यान केंद्रित करने, ध्यान केंद्रित करने, किसी नए विषय को पेश करने, या किसी स्पष्ट बात को बताने के बारे में बात की है। दूसरा दृष्टांत किसी को डांटना है, और यह वही है जिसकी हम अपेक्षा करते हैं, लेकिन यह हमेशा वही नहीं होता है।

माँ अपने तीन साल के बेटे को ज़मीन पर बैठकर कुकी जार में कुकीज़ खाते हुए देखती है, और वह कहती है, तुम क्या कर रहे हो? और बेटा कहता है, अरे, माँ, यह कैसा दिख रहा है? मैं कुकीज़ खा रहा हूँ। नहीं, वह ऐसा नहीं करता। वह तीन साल का है, और वह इन कुकीज़ को खा रहा है, और वह मुसीबत में पड़ जाता है, और वह कहता है, ओह, मुझे माफ़ कर दो, माँ।

ठीक है। वह उसे डांट रही है। वह जानकारी नहीं मांग रही है।

मती 12:34, यीशु फरीसियों को डांट रहे हैं। हे साँप के बच्चों, तुम कैसे बुरे हो? जो अच्छा है वही बोलो। इसलिए, वह उन्हें बाहर बुला रहे हैं।

मार्क 8:17 से 20, उन्होंने अभी-अभी 5,000 लोगों को खाना खिलाया है, और वे नाव पर चढ़ गए, और यीशु ने उनसे कहा, फरीसियों के खमीर से सावधान रहो। और उन्होंने कहा, अरे यार, वह परेशान है कि हम इसे नहीं बना पाए, कि हम रोटी लेना भूल गए। और उसने कहा कि मैं तुमसे रोटी के बारे में नहीं पूछ रहा हूँ।

और फिर उसने उनसे कई सवाल पूछे। लेकिन पहला सवाल जो उसने पूछा, वह था, क्या तुम नहीं समझते? और आखिरी सवाल जो उसने पूछा, क्या तुम वाकई अभी भी नहीं समझते? यह एक कठोर फटकार हो सकती है या नहीं भी हो सकती है, लेकिन ऐसा लगता है कि वह फिर उन्हें बुला रहा है। और दूसरा सवाल जो उसने पहले मार्क 3 में पूछा था जब उसने कहा था, क्या तुम्हें कोई विश्वास नहीं है? क्या तुम चिंतित हो? या मुझे माफ करना, मार्क 4, क्या तुम्हें कोई विश्वास नहीं है? जब उसने समुद्र को शांत किया।

दूसरा वाक्य पॉल के द्वारा लिखा गया है जो मुझे सबसे ज़्यादा पसंद है। मूर्ख गलातियों, किसने तुम्हें इस बकवास पर विश्वास करने के लिए बहकाया? यह तो सीधे-सीधे फटकार है। यह वैसा ही है जैसे यीशु ने फरीसियों और पुजारियों को साँपों का झुंड कहा था।

और फिर, अगर आप निम्नलिखित आयतों को पढ़ें, तो पॉल बार-बार यही कहता है। क्या आपको इस पर विश्वास नहीं हुआ? क्या आपको इसका एहसास नहीं है? और वह इस पूरी बात को बार-बार कहता है। वह उन्हें पुकार रहा है।

ठीक है। ठीक है। भावना या अनिश्चितता व्यक्त करना।

इसलिए, मरकुस 8:11 और 12 में, फरीसी यीशु से बहस करते हैं, उससे कोई चिन्ह माँगते हैं, और वह अपनी आत्मा में गहरी आह भरता है। यह पीढ़ी चिन्ह क्यों चाहती है? मुझे लगता है कि वह अपनी आत्मा में दुखी था। और फिर वह वही करता है जो वह कहता है।

वह उनसे बात नहीं कर रहा है। यह मार्क 9 से अलग है, जहाँ यीशु पहाड़ से नीचे आने के बाद उससे बात करने वाले लोगों से कहता है। और वह कहता है, हे अविश्वासी पीढ़ी, मैं कब तक तुम्हारी सहूँगा? वह सीधे उनसे बात कर रहा है।

लेकिन यहाँ वह अपने भीतर की बातें कह रहा है। लेकिन वह वास्तव में ये बातें कहता है। ठीक है।

मार्क 12:17 में, उस आदमी का दृष्टांत है जिसके पास खलिहान थे और उसे एक बड़ा खलिहान बनाने की ज़रूरत थी। और फिर वह सोच रहा है, मैं क्या करूँ क्योंकि मेरे पास अपनी सारी फसल रखने के लिए कोई जगह नहीं है? इसलिए, वह चीज़ों पर विचार कर रहा है। वह मनन कर रहा है।

वह इस बारे में सोच रहा है। ठीक है। और फिर कभी-कभी यह एक विनम्र अनुरोध या सुझाव होता है।

मार्क 5 में, दृष्टान्त, क्षमा करें, वह स्थिति है जहाँ यीशु यार्डर के साथ यार्डर की बेटी को ठीक करने जा रहा था। फिर, रक्तस्राव से पीड़ित महिला आती है। और फिर वह उस महिला को ठीक करता है, और वह चली जाती है।

और फिर जैरस के घर से लोग आते हैं, और जैरस को खबर देते हैं कि आपकी बेटी मर चुकी है। शिक्षक को और परेशान क्यों करना? फिर से, मुझे नहीं लगता कि यह दो कारणों से फटकार है। एक, ऐसा नहीं लगता कि वे कठोर हो रहे हैं।

दूसरा, वे अपने बॉस से बात कर रहे हैं। ऐसी संस्कृति में, वे कभी भी अपने बॉस को नहीं बुलाते, खास तौर पर लोगों के सामने। तो शायद यह कुछ ऐसा है, चलो अब शिक्षक को परेशान न करें।

तो, यह एक विनम्र सुझाव है या, अरे, चलो ऐसा करते हैं। यह एक आज्ञाकारी मूड में नहीं, बल्कि एक तरह से कहा गया है। हाँ।

उपवाक्य शब्द है, लेकिन यह विनम्र है। चलो ऐसा करते हैं। या शायद यह अच्छा होगा... ठीक है।

तो, सबसे पहले हमें यह निर्धारित करना है कि यह वास्तविक है या अलंकारिक। और यही हम अपने आप से पूछते हैं जब हम अपना विश्लेषण कर रहे होते हैं। दूसरी बात यह है कि अलंकारिक प्रश्न का कार्य क्या है? और हम इसका निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं। मैंने जो सूची दी है वह शायद पूरी नहीं है।

अन्य बातें भी हो सकती हैं। लेकिन हम यथासंभव यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि आलंकारिक प्रश्न क्या कर रहा है या उन्होंने इसे इस तरह से क्यों इस्तेमाल किया। अगली बात यह है कि क्या लक्ष्य भाषा में आलंकारिक प्रश्न भी हैं? मैं ऐसी किसी भी भाषा के बारे में सोचने की कोशिश कर रहा हूँ जो मेरे सामने आई हो और जिसमें ये न हों।

सवाल यह है कि लक्ष्य भाषा में अलंकारिक प्रश्न कैसे काम करते हैं? और जैसा कि हमने कहा, हम किसी नए विषय को पेश करने के लिए अलंकारिक प्रश्नों का उपयोग नहीं करते हैं। कभी-कभी, हम इसे सारांशित करने के लिए करते हैं। आपने कभी किसी पादरी को उपदेश देते हुए सुना है, और वह बिंदु एक, और फिर बिंदु दो, और बिंदु तीन के बारे में बात कर रहा है, और फिर वह कुछ ऐसा पूछेगा, तो हम यहाँ क्या कह रहे हैं? और फिर वह अपना निष्कर्ष निकालेगा।

तो, हम इसे उस तरह से इस्तेमाल करते हैं, लेकिन आम तौर पर हमारे पास कोई पादरी नहीं आता और कहता है, तो आज का संदेश किस बारे में है? वे आम तौर पर उससे शुरू नहीं करते। वे आम तौर पर किसी और चीज़ से शुरू करते हैं। तो, सवाल यह है कि, क्या जिन लक्ष्य भाषाओं के साथ हम काम करते हैं, उनमें ऐसे अलंकारिक प्रश्न हैं जो बाइबल में दिए गए प्रश्नों की तरह ही काम करते हैं? उनके पास अलंकारिक प्रश्न हो सकते हैं, जिनमें से कुछ बाइबल के प्रश्नों की तरह काम करते हैं, और बाइबल में दिए गए कुछ प्रश्न लक्ष्य भाषा से मेल नहीं खाते।

इसलिए, यदि उनके पास अलंकारिक प्रश्न हैं, और प्रश्न का अर्थ लक्षित भाषा बोलने वालों के लिए स्पष्ट है, तो हम इसे उसी रूप में प्रश्न के रूप में अनुवाद कर सकते हैं। मुझे याद है कि मैं नामीबिया में लोगों के एक समूह के साथ काम कर रहा था, जो मार्क की पुस्तक का मौखिक अनुवाद कर रहा था, और हमने लगभग पाँच या छह अध्यायों को कवर किया। और वे जो करते थे, वह यह था कि उनके पास एक बुजुर्ग व्यक्ति की रिकॉर्डिंग होती थी, जिसने उस अंश को सुनाया था जिसे हम देख रहे हैं, और फिर वे इसे मेरे लिए बजाते थे।

संयोग से वह वहाँ नहीं था, इसलिए उन्होंने मेरे लिए इसे बजाया, और फिर उन्होंने मुझे जो कुछ कहा उसका अंग्रेजी में मौखिक अनुवाद दिया। तो यह हिम्बा भाषा में से एक भाषा में था। इसलिए हिम्बा लोग इसे कहते थे, और फिर वे मुझे बताते थे कि इसका क्या मतलब है।

मुझे याद है कि हम जिस खंड में आए थे, उसमें यीशु कई सवाल पूछ रहे थे। और मुझे नहीं पता कि यह आदमी कैसे, चाहे उसे बताया गया हो कि वे अलंकारिक थे या नहीं, लेकिन उसने यही किया। वह कहता था कि वह जानता था कि वे अलंकारिक थे।

और वह शब्द, नाही, एक हिम्बा अभिव्यक्ति है। इसका कोई मतलब नहीं है। इसका मतलब है कि मैं इसे बयानबाजी में पूछ रहा हूँ, है न? और यहाँ तक कि एक स्वर-उच्चारण से भी, आप बता सकते हैं कि वह सवाल पूछ रहा था।

स्वाहिली में, अगर आप कुछ पूछ रहे हैं और इसका जवाब स्पष्ट है, तो आप कह सकते हैं, तो, क्या आप मेरे बॉस हैं? जवाब है, नहीं, आप नहीं हैं। आप मुझे क्या करना है, यह क्यों बता रहे हैं? इसलिए, वे इस तरह से कॉर्नी का उपयोग करते हैं। और ओरमा में, उनके पास एक शब्द है, उरी।

तो यह एक और है। तो, इन भाषाओं में ये छोटे कण हो सकते हैं जिनका उपयोग वे यह बताने के लिए कर सकते हैं कि ये प्रश्न अलंकारिक हैं। और मुझे स्वाहिली में एक और सवाल याद आ गया, जय।

तो, अभी हमारे पास खाने के लिए कुछ नहीं है। कल क्या होगा? और वे कहेंगे, कल, जय? यह एक और सवाल है। यह एक आलंकारिक सवाल है।

इसलिए, हमें लक्ष्य भाषा में इन अलंकारिक प्रश्नों को स्वाभाविक तरीके से संप्रेषित करने के तरीके खोजने होंगे। और जब आप ऐसा करते हैं, तो यह वास्तव में प्रभावशाली होता है। यह उनकी भाषा में बहुत सुंदर लगता है।

और वे इसे तुरंत समझ जाते हैं। अगर उन्हें यह नहीं समझ में आता तो क्या होता? फिर, हमें इसे कहने का दूसरा तरीका सोचना होगा। क्योंकि अगर हम इसे एक प्रश्न के रूप में छोड़ देते हैं, तो यह संवाद नहीं करेगा।

इसलिए, हमें इसे फिर से लिखने का तरीका खोजना होगा। और यह एक व्याकरण संबंधी बात है। यह थोड़ा उच्च स्तरीय भाषा का मुद्दा है।

यह सीधे-सीधे व्याकरण नहीं है, लेकिन यह किसी तरह भाषा का उपयोग है। ठीक है। तो अलंकारिक कथन या निर्देश ऐसे वाक्य हैं जिन्हें शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि उनका उपयोग प्रभाव या परिणाम के लिए किया जाता है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, अलंकारिक कथनों का उपयोग अलंकारिक रूप से किया जाता है, और अलंकारिक प्रश्न ऐसे प्रश्न होते हैं जिनका उपयोग जोर देने या प्रभाव के लिए किया जाता है। तो, अलंकारिक कथन या अलंकारिक निर्देश। इसलिए, उदाहरण के लिए, आपका मित्र कोई गलत निर्णय लेने वाला है, और आप उसे ऐसा न करने की सलाह देते हैं, और आप उससे कहते हैं, ज़रूर, यह एक बढ़िया विचार है।

मुझे यकीन है कि यह वाकई अच्छा होगा। वह जानता है कि आप गंभीर नहीं हैं। वह जानता है कि आप वास्तव में ऐसा नहीं सोचते हैं।

आप इसे प्रभाव के लिए कहते हैं। हम हर समय ऐसा करते हैं और हमें एहसास भी नहीं होता कि हम ऐसा कर रहे हैं। ओह हाँ, यह एक बढ़िया विचार है।

हाँ। तो, हमें ये बाइबल में मिलते हैं। ये बहुत आम नहीं हैं, लेकिन हमें ये मिलते हैं।

इसलिए, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि इन्हें शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए। फिर, सवाल यह है कि क्या हमें इसे एक कथन के रूप में छोड़ देना चाहिए? या हमें इसे किसी तरह से बदलना चाहिए या किसी तरह से समायोजित करना चाहिए ताकि पाठ पढ़ने वाले लोग यह समझ सकें कि यह जानकारी देने के लिए कोई सीधा-सादा कथन नहीं है? इसलिए, हमें कुछ करने की ज़रूरत है। यहाँ एक है।

यह यूहन्ना 11 है, लगभग उसी समय जब लाज़र की मृत्यु हुई थी, और यीशु ने जानबूझकर दो दिन और देरी की ताकि लाज़र निश्चित रूप से मर जाए। और फिर उसने शिष्यों से कहा, चलो फिर से यहूदिया चलते हैं। और शिष्यों ने उससे कहा, रब्बी, यहूदी अभी-अभी तुम्हें पत्थर मारने की कोशिश कर रहे थे, और तुम फिर जा रहे हो? और फिर यह सब बात, क्या तुम नहीं जानते कि हेरोदेस तुम्हारे पीछे पड़ा है? और यीशु ने कहा, हेरोदेस, वह लोमड़ी, वह छोटा सा बच्चा, मुझे हेरोदेस की परवाह नहीं है।

मुझे काम करना है। और फिर वह कहता है, और वे इसे समझ नहीं पा रहे थे। और फिर वह कहता है, स्पष्ट रूप से, लाज़रस मर चुका है।

और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ न था, कि तुम विश्वास करो। परन्तु आओ, हम उसके पास चलें। इसलिये थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है, अपने साथी चेलों से कहा, आओ, हम भी चलें, कि उसके साथ मरें।

यह वास्तव में एक बयानबाजी है। ईमानदारी से कहूँ तो, अंग्रेजी में इसे जिस तरह से पढ़ा जाता है वह बहुत ही नीरस है। ऐसा लगता है कि इसका कोई शक्तिशाली बयानबाजी प्रभाव नहीं है, कम से कम मुझ पर तो नहीं जब मैंने इसे पढ़ा।

और कभी-कभी आप इसे पढ़ते हैं, और आप सोचते हैं, ठीक है, यह क्या है? और फिर आप बस आगे बढ़ते हैं, और आपको वास्तव में एहसास नहीं होता कि वह व्यंग्यात्मक नहीं है, लेकिन वह शाब्दिक नहीं है। वे यीशु के साथ जाने और मरने के लिए तैयार नहीं थे। वे यह नहीं कह रहे थे, आप जानते हैं कि, यीशु जहाँ भी जाता है, अगर वह मर जाता है, तो हम भी मर जाएँगे।

पीटर ने यही किया जब वे अंतिम भोज पर थे। और वह कहता है, अगर तुम मरने जा रहे हो, तो मैं तुम्हारे साथ जा रहा हूँ, और मैं मरने जा रहा हूँ। हमें यहाँ ऐसा नहीं मिलता।

यह एक अलंकारिक कथन है जिसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। यह वही कथन है जो हमने दूसरे दिन, दूसरे व्याख्यान में सुना था, क्षमा करें, वह व्यक्ति जिसका बेटा दुष्टात्मा से ग्रस्त था। और फिर वह यीशु से कहता है, लेकिन यदि आप कुछ कर सकते हैं, तो हम पर दया करें और हमारी सहायता करें।

और यीशु ने कहा, यदि तुम कर सकते हो, तो जो विश्वास करता है उसके लिए सब कुछ संभव है। और तुरंत, लड़के के पिता ने चिल्लाकर कहा, मैं विश्वास करता हूँ, मेरे अविश्वास में मेरी मदद करो। हमने पहले इस पर चर्चा की थी, लेकिन यदि आप कर सकते हैं तो समीक्षा के मामले में, यह स्पष्ट नहीं है कि वहाँ क्या हो रहा है।

क्या यह एक अलंकारिक कथन है? क्या यह एक अलंकारिक प्रश्न है? एनएलटी इसे एक अलंकारिक प्रश्न बनाता है, और फिर वे यह कहकर इसमें और भी जोड़ देते हैं, अगर मैं कर सकता हूँ तो आपका क्या मतलब है? अन्य लोगों के लिए, अगर आप कर सकते हैं तो एक प्रश्न चिह्न लगाएँ। अंग्रेजी में, हमें जोर देने के लिए आवाज के स्वर का उपयोग करना पड़ता है, लेकिन हम किसी ऐसी चीज पर जोर दे रहे हैं जो एक पृष्ठ पर स्थिर शब्द है। अंग्रेजी में अन्य अनुवाद इसे यीशु के इस कथन के रूप में लेते हैं, ठीक है अगर आप विश्वास कर सकते हैं, तो सब कुछ संभव है।

वे इसे एक शाब्दिक कथन के रूप में लेते हैं कि यीशु ऐसा कहकर पिता से बात कर रहे हैं, और कह रहे हैं, यदि तुम विश्वास कर सकते हो, तो इसकी व्याख्या करने के विभिन्न तरीके हैं क्योंकि यह भ्रामक है। यह कठिन है।

मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता, मुझे पक्का पता है कि यह एक बयानबाजी है, लेकिन निश्चित रूप से पाठ में और भी बहुत कुछ चल रहा है, अगर आप इसे सिर्फ एक शाब्दिक यीशु के रूप में लें जो उस व्यक्ति को विश्वास रखने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है, तो यह एक संभावना है। अगर आप पाठ को देखें तो यह एक वैध व्याख्या है। हालाँकि, ऐसा लगता है कि इसमें और भी बहुत कुछ चल रहा है।

ठीक है। अगला वाला मार्क 14 में पाया जाता है। वे गेथसेमेन के बगीचे में हैं।

यीशु प्रार्थना करने चला गया, और आकर उन्हें सोते पाया, और उनसे कहा, “शमौन, क्या तुम सो रहे हो? क्या तुम एक घड़ी भी जागते नहीं रह सकते? जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।” तब वह फिर गया, और वही बातें कहकर प्रार्थना की।

फिर से, वह वापस आया और पाया कि वे सो रहे थे, उनकी आँखें बहुत भारी थीं, और वे नहीं जानते थे कि उसे क्या जवाब दें। इसलिए हम पहले वाले को लेते हैं। साइमन, क्या तुम सो रहे हो? एक आलंकारिक प्रश्न के रूप में।

दरअसल, ग्रीक में, आप इसे देखें, यह एक आलंकारिक प्रश्न या आलंकारिक कथन हो सकता है क्योंकि ग्रीक में कोई प्रश्न चिह्न नहीं है। यह सिर्फ़ कहता है, साइमन, तुम सो रहे हो। लेकिन हम इसे आलंकारिक प्रश्न के रूप में लेते हैं।

फिर वह यह कहता है। फिर वह तीसरी बार आया और उनसे कहा कि वे सोते रहें और आराम करते रहें। क्या वह वास्तव में उनसे कह रहा है कि उन्हें सोते रहना चाहिए? मैंने एक बार इस पर एक उपदेश सुना था, और पादरी ने कहा कि यीशु इसके बारे में चिंतित थे।

वे थके हुए थे। वे पूरे दिन चलते रहे थे। यह फसह का त्यौहार था।

वे सोये नहीं थे, और वह उनके बारे में चिंतित था। तुम लोग, जाओ और थोड़ा आराम करो। यह काफी है।

वह घड़ी आ पहुंची है: देखो, मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है। उठो!

चलो चलें। माफ़ करना। जिस समय उसने कहा कि सोते रहो और जिस समय उसने कहा कि चलो उठो और चलो चलें, दोनों में लगभग दो सेकंड का अंतर है।

इसलिए, इस बात की संभावना बहुत कम है कि वह उन्हें सोने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है, अगर असंभव नहीं है। दिलचस्प बात यह है कि कई अंग्रेजी अनुवादों में इसका अनुवाद किया गया है। क्या आप अभी भी सो रहे हैं और आराम कर रहे हैं? दिलचस्प है। उन्होंने इसे एक आलंकारिक प्रश्न में बदल दिया है क्योंकि सोने और आराम करने का कोई मतलब नहीं लगता है।

तो, आप अपने उस मित्र के पास वापस जाएं जो यह निर्णय ले रहा है, और आप कहते हैं कि यह एक बढ़िया विचार है। यह वाकई बहुत अच्छा होने वाला है। और वह कहता है, लेकिन मैं इसे वैसे भी करने जा रहा हूँ।

और तुम कहते हो क्या? ठीक है, आगे बढ़ो और फिर करो। तुम उसे ऐसा करने के लिए नहीं कहते, लेकिन यह ग्रीक में आज्ञात्मक मुद्रा में है। सोते रहो और आराम करो।

दिलचस्प है। ठीक है, तो ये समझने में भी समस्या पैदा कर सकते हैं। अनुवाद करते समय भी ये समस्याएँ पैदा कर सकते हैं।

और हमें इसका अनुवाद कैसे करना चाहिए? क्या हमें इस विशेष प्रश्न का अनुवाद आलंकारिक प्रश्न के रूप में करना चाहिए? यदि जिस भाषा में हम जा रहे हैं, जिसका हम अनुवाद कर रहे हैं, उसमें आलंकारिक कथन नहीं हैं, तो यह संचार में एक समस्या होगी। यह आगे बढ़ने और इसे आलंकारिक प्रश्न में कहने का एक अच्छा कारण होगा, जैसा कि कई अंग्रेजी संस्करण करते हैं। और इसलिए एक बात यह है कि क्या हम कुछ ऐसा कर रहे हैं जो बेहद असामान्य है? और इसका उत्तर है नहीं क्योंकि हमारे पास कई अंग्रेजी संस्करण हैं जो ऐसा करते हैं।

इसलिए, यह हमारे ऐसा करने के चयन के लिए औचित्य या कुछ समर्थन है। तो, यह हमें कहाँ छोड़ता है? तो हम पहचानते हैं कि यह एक अलंकारिक कथन है, और हम पूछते हैं, इसका कार्य क्या है? क्या यह एक फटकार है या कुछ और? और याद रखें कि यदि हम ग्रीक या हिब्रू रूपों का उपयोग करते हैं, तो हमें खुद से पूछना होगा, क्या लोग उस अलंकारिक प्रभाव को समझ पाएंगे जिसका लेखक ने इरादा किया था? और जैसा कि हमने कहा, अधिकांश संस्करण यूहन्ना 11, 16 का अनुवाद करते हैं, जब यीशु कहते हैं, या जब थॉमस ने कहा, पिता, चलो यरूशलेम चलते हैं और मर जाते हैं। वे इसका शाब्दिक अनुवाद करते हैं।

मैंने उनमें से किसी को भी इसका अनुवाद करते नहीं देखा, सिवाय थॉमस के सटीक रूप और सटीक शब्दों के। लेकिन जैसा कि मैंने कहा, यह कुछ हद तक अप्रभावी लगता है। दूसरा, वे मार्क 9, 23 और 24 की व्याख्या और अनुवाद करने के तरीके में भिन्न हैं, और अक्सर, यह अस्पष्ट है।

एनएलसी विश्वास का एक कदम उठाता है, जैसा कि यह था, और इसे एक बयानबाजी प्रश्न में बदल देता है और यह वास्तव में, वास्तव में स्पष्ट करता है कि यीशु कहते हैं, यदि आप कर सकते हैं तो आपका क्या मतलब है? अब, क्या वे यीशु में शब्द जोड़ रहे हैं? क्या उसने वे शब्द कहे थे? कुछ लोग तर्क दे सकते हैं, हाँ। क्या बयानबाजी का प्रभाव बदल गया है? मामला बनाया जा सकता है; नहीं, यह नहीं बदला है। तो, यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है? यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात बयानबाजी का प्रभाव और शब्दों को बनाए रखना है।

इसलिए, हमें दोनों को संतुलित करना होगा। तीसरी बात यह है कि मार्क 14:41 में अधिकांश संस्करण इसे एक अलंकारिक प्रश्न में बदल देते हैं ताकि यह स्पष्ट हो जाए क्योंकि उन्हें यह समझ में आ गया था कि लोग यह नहीं समझ सकते कि यह एक अलंकारिक कथन है। इसलिए, हम जितना संभव हो सके उतना बेहतर रूप रखते हैं जबकि साथ ही साथ अलंकारिक कार्य पर वास्तव में जोर देते हैं।

हम ऐसा बयानबाजी से जुड़े सवालों और बयानबाजी से जुड़े बयानों के लिए करते हैं। तो, यह एक और अनुवाद समस्या है जिससे हम बाइबल का अनुवाद करते समय जूझते हैं।

यह डॉ. जॉर्ज पेटन द्वारा बाइबल अनुवाद पर दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 24 है, आलंकारिक प्रश्न और आलंकारिक कथन।